यह है चिदानन्दमयी
नन्दन !

यहाँ
ना तो बन्धक है
ना बन्धन !
ना तो क्रन्दक है
ना क्रन्दन !
और
और क्या
ना तो वन्दक है
ना वन्दन !

चेतना की यह असीम
.... अपार धरती
एक अपूर्व संवेदनामय
हरीतिमा से उल्लसित
पुलकित है
लो ! मन को हरती है
भूत नहीं है
अभूत !
अनुभूत नहीं है
अननुभूत !
अद्भुत !

यह भी निश्चित
विदित हुआ है
कि
अतीत का सृष्ट नहीं है, असृष्ट
दृष्ट नहीं है, अदृष्ट

ऐसे दृश्य पर
दृष्टिपात किया है
इस मौन द्रष्टा ने
स्वयं के स्रष्टा ने
एक सौम्य भाव से
सहज भाव से
जिस दृश्य का दर्शन
दुर्लभ, दुर्लभतर, दुर्लभतम है

नागलोक के नागेन्द्रों
अमरलोक के अमरेन्द्रों
नरलोक के नरेन्द्रों
[illegible]
[illegible] चिंतन के घूँघट में रहने वाले
विषयों के दास
दासानुदास
विषयी विलासियों को
इतना ही नहीं
जिन की ज्ञान चेतना मोहग्रस्त है
और
और क्या
मात्र क्रियाकाण्ड में व्यस्त
मस्त !
साधु संन्यासियों को भी
यह श्रुत परिचित/विदित
सकल संसार / विकल अपार
सागर है क्षार
दुख से भरपूर

शरण चरण

शरद जलद की
धवलिमा सी
छवि धारती
मृदुल मृदुलतम
सकल दलों सहित
मम चेतना कुमुदिनी के
विकास हास उल्लास में
आपके
शुभ्र शुक्ल
अतुलनीय कमनीय
वर्तुलीय विमल निर्मल
शीतल
मुख मण्डल से
पराजित हुआ
लज्जित हुआ
पूर्ण चन्द्र भी
चूर चूर हो
अशरण हो
आपके
तारण तरणों
चरणों में
शरणाभिलाषी
दिन रात........
सेवारत
नखावलि के मिष !
कारण है !
हे! जगदीश !
सकलज्ञ धीश !

□□□

दर्पण में एक और दर्पण

हे! कंदर्प दर्प से शून्य !
जित कंदर्प !
सम्पर्क में
जब से
आया हूँ
आपके !
आपके
तप्त कनकाभ तन के
मेरु अकम्प मन के
नीर निधि गंभीरतम
दिव्य श्राव्य वचन के
और !
महासत्ताभिभूत
गुणगण के
परिणमन का प्रभाव !
ऐसा पड़ा है
मुझ पर !
कि
अकृत पूर्व निजी कार्य में
अनिवार्य मैं
अनिमेष हुआ हूँ
तत्पर !

और यह क्या ?
जीवन का वह प्राचीनतम रंग
चंचल सकम्प मन का ढंग
अंग व्यंग और अनंग !
पूर्णतः परिवर्तित हो गया है
एक मौलिक
अलौकिक आभा में
तुम सा !

किन्तु!
इसमें
केवल !
आपकी ही विशेषता नहीं है !
मेरी भी !
आप में
प्रभावित करने की शक्ति निहित है
तो !
इस चेतन में प्रभावित होने की
भावित होने की
यह निमित्त-नैमित्तिक संबंध है

आप निमित्त हैं बाह्य कारण
मैं उपादान आभ्यंतर
अनन्यतर
इतना ही मुझमें और आप में
अंतर

उचित ही है
प्रत्येक निमित्त, प्रत्येक उपादान को
प्रभावित नहीं कर सकता

नी । प्रत्येक उपादान, प्रत्येक निमित्त से
प्रभावित भी कहाँ होता ?

लाल लाल कोमल
गुलाब फूल !
उज्ज्वल/उज्ज्वलतम
स्फटिक मणि को
अपनी आभा के अनुरूप
अनुकूल भावित करता है
किन्तु
पाषाण खंड को क्यों नहीं करता?

□□□

वंशीधर को

हे अनंत !
हे अमूर्त!

अनंत अमूर्त आकाश में
होकर भी
विमलता की अभ्रंलिहा
शिखरिणी पर
आवास अवकाश है आपका

जब ये मूर्त लोचन
विषयातीत होकर भी
विषय नहीं बना पाये आपको

तब !
अन्य सभी कार्यों से उदास
यह मेरा मन
क्षण क्षण
आपके श्रुत का आधार ले
आप तक पहुँचने का प्रयास
प्रारंभ किया है
लो ! अनायास

श्वास श्वास पर
आपके नाम अंकित आसीन
कराता

श्वास नाभिमंडल से
प्रतिक्रमा के रूप में
हृदय कमलचक्र से
पार कराता हुआ
ब्रह्मरंध्र तक पहुँचाता
ऊर्ध्वगम्यमान
आज !
आपका श्रुतिमधुर संगीत
निजी श्रवणों से
साक्षात्कार कर रहा हूँ

निस्संग हो
निश्शंक हो
निडर/निश्चिंत हो
मौन ! मृदु मुस्कान के साथ
हे ! नाथ !

उचित ही है
पुखराज की हरीतिमा को
जीतने वाली
चपल माला लचीली
पतली तनवाली

थोड़ा सा
पवन का झोंका खा
झट सी धरा पर गिरने वाली

माधुर्य मार्दववती
माधवी लता
आपदा अशरणा भी !

उत्तुंग ऋजु वंश की
शरण ले
वंश से लिपटती लिपटती
गुरुओं के प्रति समर्पण जीवन में
अवंशजा पर ! !
वंश मुक्ता को

औं' !
वंशीधर को भी
प्रभावित करती हुई
वंशातीत हो
शून्य में
शून्य से
वार्ता करती
लहलहाती
क्या नहीं जीती ?

□□□

विभाव अभाव

[illegible]
[illegible]
[illegible] के सारमय
[illegible]
[illegible] वीतमोह
[illegible] की
[illegible]
[illegible]
[illegible] विभूति से
[illegible] नुभूति से
[illegible] / औपाधिक
[illegible] प्रणाली को
[illegible] की पृष्ठभूमि है
[illegible]
[illegible] के धरती — तल से
[illegible] दिया है

अन्यथा
आपाद कंठ
अंग अंग
औ उपांग
आपके
अनंग के अंग की
नैसर्गिक आभा का
उपहास करने वाले
पलाश के उत्फुल्ल
फूल की लालिमा को
धारण करते हैं
किन्तु
करुणा रस से आपूरित
लबालब
निश्चल अडोल
विशाल दो लोचन
लाल अरुण वर्ण से
वंचित क्यों?
रंजित क्यों नहीं ?

□□□

हे निरभिमान

अहर्निश आत्मा में
ध्यान निधिध्यास
अध्यास/अभ्यास के
फलस्वरूप
आपमें हुआ है
सम्यग्ज्ञान रूपी
जाज्वल्यमान
प्रमाण का
आविर्माण
इसीलिए
चेतना की समग्र सत्ता पर
पूर्ण प्रभाव डालता
विद्यमान
मूर्तमान
मान ने
भावी अनंतकाल के लिए
आपको अपनी पराजित
पराभूत !
पीठ दिखाता
धावमान
किया प्रयाण

हे निरभिमान!
यह अंतर्घटना की भावाभिव्यक्ति [illegible]
प्रमाण की सघन शान्त छाँव में [illegible]
सहज सहवास में
रहने वाली
धरती निरखती
आपकी नत / विनम्र नासिका [illegible]
मानाभिभूत मान की मूर्ति
पूर्ण फूला चम्पक फूल को
जीतती हुई
की है ......।

□□□

आकार में निराकार

[illegible] को अवगाहित कर रहा हूँ
[illegible] रात् चेतना के गहराव में
[illegible] के बल पर

दोनों हाथों से
नीचे से नीर को चीरता हुआ
चीरता हुआ
ऊपर की ओर फेंकता हुआ
फेंकता हुआ
जा रहा हूँ
आर पार होने
अपार की यात्रा करने

[illegible] कोई आपत्ति नहीं है
[illegible] की सामग्री अवश्य !
[illegible]

किन्तु अभी कोई ओर छोर
दृष्टि में नहीं आ रही है
शोर भी तो नहीं
चारों ओर मौन का साम्राज्य
विस्तृत वितान
बस!
सब कुछ स्वतंत्र

अपनी अपनी सत्ता को सँजोये हुए
सहज सलील समुपस्थित
परस्पर में किसी प्रकार का टकराव नहीं
लगाव के भाव नहीं
अपने अपने ठहराव में
अपने अपने संवेदन
अपने अपने भाव
पर से भिन्न
अपने से अभिन्न
निरभ्र आकाश मंडल में
उडुदल की भांति
ज्ञानादि उज्ज्वल उज्ज्वल गुणमणियाँ
अवभासित हैं
अवलोकित है
आलोक का परिणमन यहाँ
घनीभूत प्रतीत होता है
लो !
यहीं पर मिथ्यात्व रूपी मगरमच्छ
से भी साक्षात्कार
किन्तु उधर से आक्रमण नहीं
कटाक्ष नहीं
संघर्ष के लिए
कोई आमंत्रण भी नहीं
अनंत काँटों से निष्पन्न
उसका शरीर है
कठोरता का शुद्ध परिणमन
कठोरता की परम सीमा है

परन्तु मृदुता से विरोध नहीं करता
विरोध में बोध कहाँ ?
विरोध तो अज्ञान का प्रतीक
...कार
...ा !
...गवाक्षों से
...ती हुई
...बाधित ज्योति किरण
...री ओर चाँदी की पतली धार सी
...ा रही है
सानन्द आसीन है
सत्तागत अनन्तानुबंधी सर्प
कंदर्प दर्प से पूरा भरा है
ज्ञान ज्ञेय का सहज संबंध हुआ
शुद्ध सुधा
और विष का संगम हुआ
...ह ज्ञान के लिए अपूर्व अवसर है
...ान न तो दुखित हुआ
...न सुखित हुआ
...किन्तु यह सहज
...विदित हुआ कि
...यान ध्येय संबंध से भी
...ज्ञेय ज्ञायक संबंध
...महत्वपूर्ण है
...पूर्ण है/सहज है
...कोई तनाव नहीं

इसमें केवल स्वभाव है
भावित भाव!
ध्येय एक होता है
जब ध्यान में ध्येय उतरता है
तब ज्ञान ससीम संकीर्ण होता है

संकुचित ज्ञान
अनंत का मुख छू नहीं सकता
अतः ज्ञान प्रवाहित होता हुआ
अनाहत बहता हुआ
जा रहा है
सहज अपनी स्वाभाविक गति से
अद्भुत है!

अननुभूत है !
विकार नहीं
निर्विकार
तप्त नहीं
क्लान्त नहीं
तृप्त है
शान्त है
जिसमें नहीं ध्वान्त है
जीवित है
जाग्रत भी नितान्त है
अपने में विश्रान्त है

यह विभूति
अविकल अनुभूति
ऐसे ज्ञान की शुद्ध परिणति का ही
यह परिपाक है

[illegible] का द्वितीय पहलु
[illegible] चमत्कार से परिचित कराता
[illegible] होता जा रहा है
अभेद की वसंत क्रीडा प्रारंभ
द्वैत के स्थान पर
अद्वैत उग आया है

[illegible]
[illegible] पार हुआ
[illegible]कार हुआ
[illegible]कार हुआ
[illegible] है।
[illegible]
[illegible] प्रकाश का अवतरण
[illegible] उत्सर्गित होता हुआ
[illegible] होता हुआ
[illegible] साकार हो उठा
[illegible] निराकार हो उठा
[illegible]
[illegible] की लम्बी यात्रा
[illegible] को
[illegible] हुई
[illegible] हुई
[illegible]
[illegible] है
[illegible] है
[illegible] है

हम नहीं
तुम नहीं
यह नहीं
वह नहीं
मैं नहीं
तू नहीं

सब घटा
सब पिटा
सब मिटा

केवल उपस्थित !
सत् सत् सत् सत्
है है है है ।

□□□

स्थित प्रज्ञा

[illegible] के भीतरी मध्यभाग में
[illegible]
तीन रेखाएँ
समस्त आत्मप्रदेशों को
अपने प्रभाव से
प्रभावित करती हुई
आपकी [illegible]
[illegible] की शोभा वैभव में
और [illegible] की छटा उत्कीरतीं
विस्तृत फैलातीं
सम्यक् दृष्टि
स्थित प्रज्ञा
विरागता के परिवेश में
प्रतिछवि सी
आपके कण्ठ प्रदेश पर
केन्द्रीभूत हो
जगमग जगमग जगी हैं !
फलस्वरूप
आपके कण्ठ को देख
अपने कण्ठ से तुलना कर
स्वयं को अतुल अमूल्य
समझने वाला
दिव्य शंख भी

स्वयं को निर्मूल्य/नगण्य
समझकर
लज्जातिरेक से
लज्जित हो
विकल हो
सर्वप्रथम चिंता में डूब गया
दिन प्रतिदिन
वह
उस चिंता के कारण
सफेद हुआ
और अन्त में
ऐसा विचार करता है
कि
संसार को मुख दिखाना
कैसा उचित होगा अब
मध्य रात्रि में उठकर
अपार जलराशि में जाकर
डूब गया...!
अन्यथा
सागर में उसका
अस्तित्व क्यों?
हे भगवन्!!

□□□

अधरों पर (अभिव्यक्ति)

[illegible] अनुमान नहीं है
[illegible] पूर्ण सत्य है
[illegible] प्रमाण है
[illegible]
[illegible] अन्तर
[illegible] का अपार/अपरम्पार
[illegible] सागर
[illegible] विष पूर्ण
[illegible] परिणामों की
[illegible] लहरों से
[illegible] रहा है निरन्तर !
[illegible]
[illegible] पुष्कल अगाध
[illegible] के अन्दर !

अन्यथा

मूँगे की मंजु अरुणिमा भी

स्वयं

जिनके आश्रम में

प्रतिदिन पानी भर कर

अपने को कृतार्थ मानती है

ऐसे आपके

लाल लाल

विमल निहाल

अधरों के अग्रभाग पर

हाव भाव सहित

सोल्लास

मंद स्मित नर्तकी

नर्तन क्यों कर रही है?

हे ! विभो !

□□□

अर्पण

शशिकला के

मृदुल कल करों का

[illegible]

परम प्यार

पाकर

[illegible] का

[illegible] का

[illegible] पान करती

शशिकला की सितता को

अपनी कोमल छवि से

[illegible]

कुमुदिनी

भी

प्रखर प्रचण्ड

प्रभाकर कर–नखघात से

खुलकर/खिलकर दिनभर

[illegible]

[illegible]

विकरणशीला

कमलिनी भी

अकुलाती

जीवन से हाथ धोकर
रूप लावण्य खोकर
दृष्टि अगोचर
        होकर
मिट्टी में मिल जाती
हेमन्तीय
हिमालय का
हिममय चूडा !
छूकर उतरा
हिम मिश्रित
समीर स्पर्श
        पाकर ।
किन्तु
यह कैसी !
अद्भुत घटना
विरोधाभास?
कि बाहर भीतर
        शीतल
होता जा रहा हूँ
हे शीतल !
शीतलता की तुलना
किस विध करूँ?
किस शीतलता के साथ?
ऐसा शीतल पदार्थ नहीं
धरती तल पर

किसविध
शब्दों से कर सकूँ?
अकथ्य का कथन
मथन
क्योंकि
शीतलधाम/ललाम
शीतांशु
सुधा का आकर भी
तरुण अरुण की किरणों से
तप–तप कर
सुधा विहीन
होता हुआ दीन
शीतोपचारार्थ
अमा औ प्रतिपदा की
घनी निशा में आकर
आपके तापहारक
शान्ति प्रदायक
पाद प्रान्त में
शांत छाँव में
पड़ा रहता है
अन्यथा
उन दिनों
नभ मण्डल में
वह दिखता क्यों नहीं?
हे अविनश्वर!
सघन ज्ञान के
ईश्वर !

□□□

[illegible] भाव

[illegible]

विनत मन
प्रणत तन
नत नयन
अंग अंग औ उपांग
नमित करते
अमित अमिट
अतुल / विपुल
विमल / परिमल
गुण गण कमलों का
अर्घ अर्पित
समर्पित करते
आपको निरखते हैं
उस तरह
जिस तरह
हरित भरित
पल्लव पत्रों
फूले फूलों
फलों दलों से
लदा हुआ
मस्तक झुकाता
अपनी जननी
वसुंधरा के
चरणों में
विनीत
वह पादप !

प्रतिफल यह हुआ
कि
उनके मानस सरोवर में
कल्पनातीत
आशातीत
विकल्पों की
तरल तरंगमाला
पल भर बस
परवश
तरंगायित हो
उसी में उत्सर्गित
तिरोहित
इस निर्णय के साथ
हार रे!
अब तक
मेरा निर्णय, निश्चय
निश्चय से
सत्य तथ्य से
अछूता रहा
नश्वर असत्य
सारहीन को
छूने
दीन बना है
भ्रमित मन
छटपटा रहा है
मम आत्मा मान से

अपने अंग अंग को
सामयिक
आदेश इंगन से
इंगित किया
कि हो जाओ
जागृत ! सावधान!
अपने कर्तव्य के प्रति
प्रतिपल !
लोचन युगल
एक गहरी नती की अनुभूति में
लीन हो डुबकी लगाने लगा
कर कमल
प्रभु के चरणों में
समर्पित होने
उद्यत आतुर
जुड़ गये
घुटने धरती पर
टिक गई
पंजों का सहारा
एड़ी पर पीठ
आसीन
और
भूली फूली
नासिका

प्रायश्चित माँगती
धरती पर रगड़ने लगी
अपनी अनी!
[illegible]
चिर समार्जित
मान का विसर्जन करने
कृतसंकल्प
प्रणत !
अनन्त काल के लिए
हे अनन्त के पार उड़ने वाले !
अनन्त सन्त !!

□□□

प्रतीक्षा में

सप्तम पृथ्वी का
रवरव नरक
रसातल से भी नीचे
निगोद के तलातल
पाताल से निकला हुआ
किसी कर्मवश
ऊर्ध्वगम्यमान
दुर्लभतम
जंगमवान हुआ
सुकृत योग
शुभोपयोग
संयमवान हुआ !
यह यात्री
यात्रातीत होने
भवभीत हो/विनीत हो
एक अदम्य जिज्ञासा के साथ
आप से, धर्मामृत पान करने की
प्रतीक्षा में
उस तरह
जिस तरह
अपने पुरुषार्थ के बल पर
क्षार सागर के

अगम/अगाध तल से
ऊपर उठकर
सागर जल के
अग्रभाग पर
आकर !
अपने को कृतार्थ बनाने
यथार्थ बनाने
सुचिर काल
क्षार जल के सेवन से
फटा हुआ मुँदा हुआ
मुख खोलकर
वर्षाकालीन
नभ मण्डल में
जल से लबालब भरे
विचरते/सहज डोलते
सभी जलद दलों की ,
अपेक्षा नहीं करती
केवल !
स्वाति नक्षत्रीय !
मेघमाला से
मौन ! किन्तु
भावविभोर हो
प्रार्थना करती

अपनी कारुणिक आँखों से
पूजा करती
मौलिक मौक्तिक मणियों में
ढलने की प्रकृति वाले
अमृतमय शान्त शीतल
उज्ज्वल जलकणों की
प्रतीक्षा में
वह शुक्तिका !

□□□

अमन

हो जितकाम
ललाम
आपने ऐसा
कौन सा किया है काम
कि
काम का तमाम काम
हो बेकाम
आगामी सीमातीत काल तक
अनुभव करता रहेगा
विराम का
विदित होता है कि
युक्ति से काम लिया है आपने
शक्ति से नहीं
एक पंथ दो काज !
इस सूक्ति का निर्माण किया है
यथार्थ में
आपने
चिरकालीन चंचल मन की सत्ता
को।
जो है
पर से प्रभावित चेतना का ही
एक विकृत परिणाम
दुखधाम
और मनोज का
अधिकरण
उद्गम स्थान

अधिष्ठान
हे! आप्त
समाप्त किया है !
आपकी दृष्टि
मूल पर रही
चूल पर नहीं
कारण के नाश में
कार्य का
विकास / विलास
संभव नहीं असम्भव!
कारण के सहवास में
कार्य का
वह विनाश भी
असंभव !
यह व्याप्ति है
औ आपका न्याय सिद्धान्त
हे शंभव !
इसीलिए आपका संदेश है
आदेश है
कि
दूर रहो
हे भद्रभव्यों !
मन से
मनोज से
एवं
मनोज के बाण
सुमन से
फिर बनो
अमन !

□□□

वहीं वहीं कितनी बार

[हे] अभय !
[दान] विधान विधाता
[दया]निधान
[करु]णावान
श्रीपाद प्रान्त में
कुछ याचना करने
याचक बन कर !
गायक रूप में
आया था
[चाह]ता था कुछ स्वच्छ साफ धोना
[बा]हर से होना
[सु]न्दर सलोना
[कि]न्तु
यह आपकी सहज
समता कृति
आकृति
इस विषय का परिचायक है
कि

इच्छा याचना
दीन हीन
दयनीय भाव से
परोन्मुखी हो
पर सम्मुख
हाथ पसारना
आत्मा की संस्कृति
प्रकृति नहीं है
विभाव संस्कारित
विकृति है
पल पल मिटती
पलायु वाली
परिणति है
लो ! यह भी अज्ञात ज्ञात हो
कण कण से मिलन हुआ
अणु अणु का छुवन हुआ
पुनि पुनि बिछुड़न
छुड़न हुआ
विभ्रम से भ्रमित हो
लक्ष्यहीन अन्तहीन
उसी ओर मुड़न हुआ
भव भव में भ्रमण हुआ

पुनः पुनः वहीं वहीं
गमनागमन हुआ

महाकाल का प्रभाव
दाव
बाहर से दवाब
भीतर भावुक भाव
काल का अनुगमन हुआ !

[illegible] मात्र
[illegible]/परिवर्तन
[illegible] हुआ !

हो रहा होगा
त्रैकालिक
वैभाविक
या स्वाभाविक
यह आन्तरिक
चरण चरण!
संचरण !
जिसका उपादान
साधकतम, बाधकतम
जो भी हो
स्वायत्त पुरुषत्व
कारण रहा
अधिकरण रहा

[illegible] नहीं
[illegible] चाल नहीं
[illegible]
[illegible] पर लिखित
[illegible] सवाल नहीं
[illegible]

चिरन्तन घटना में
कुछ भी घटन नहीं
कुछ भी बढ़न नहीं
हुआ हनन नहीं
अंश अंश सही
रहा कण कण वही
और रहा वहीं
और रहा वहीं

मेरा पर में
पर का मुझ में
मात्र आभास
मिश्रण सा
किन्तु
कहाँ हुआ संक्रमण

संकर दोषातीत
ध्रुव पिण्ड रहा यह !
अब क्या होना
होना ही अमर रहा
होना ही समर रहा
समर रहा !
होना ही उमर अहा!

चैतन्य सत्ता के
मणिमय आसन पर
आसीन पुरुष का
होना ही !
छायादार छतर रहा
सुगंध वाहक चमर रहा

औ अधिगत हुआ
अवगत हुआ
कि यह दान का
विधि विधान
बाहरी घटना है
औपचारिकी

[illegible]
[illegible] घटना नहीं
[illegible]

परस्पर आपस में
अपादान का
आदान प्रदान
नहीं होता
उसका केवल होता
अपने में ही
आप रूप से
आविर्माण
हे कृतकृत्य

[illegible] हुआ
[illegible] अनुभूत
[illegible] वेदनामय
[illegible] आकार में
[illegible] होकर
[illegible] हुआ
[illegible] !

□□□

डूबा मन रसना में

अरी रसना !
कितनी लम्बी स्थिति है तेरी
मरी नहीं तू अभी
मेरी उपासना
मुझे स्वयं करना

किन्तु
मेरी शक्ति क्षमता
मेरे पास ना !
मेरे वश ना !
वासना की वसना
जो दृष्टि अगोचर/अगम्य
ओढ़ रक्खी है तूने ! हा!
चाहती नहीं तू
अपने में वासना
तेरी निराली है
रचना
स्वाभाविक सा बन गया है
तेरा कार्य, पर में
रच पचना

कभी मिठास की आस
मधुरिम मोदक चखती
श्रीखण्ड चखने सदा
उत्कण्ठिता
कंठ फुलाती
संतुष्टा तृप्ता कदा
क्या होती मुधा?

कभी कभी
...र ...र करती दिखती
...
... चाटती
... परा

निरे निरे औ
नये नये नित
व्यंजन स्वाद विलीना
स्व पर बोध विहीना
राग रागिनी वीणा

...
...
... को भी
... करती
... करती अपनी पूर्ति में
...नी स्फूर्ति में
नित निरत रहती
कि...

तेरी क्षुधा कभी मिटती भी
क्या नहीं ?

ब्रह्माण्डीय रस राशियाँ
तेरी अनीकी भीतरी शरण में
समाहित हुई है जा जा
आज तक
अगाध गहराई है वह
हे ब्रह्माण्ड व्यापिनी
अनंतिनी
महातापिनी
महापापिनी

"जब तक तेरा पुण्य का
बीता नहीं करार
तब तक तुझको माफ है
चाहे गुनाह करो हजार !"
इस सूक्ति की स्मृति भर
मन में रखकर
पुरुषार्थ क्षेत्र में
निशिदिन तत्पर
हूँ मैं इधर

मत गिन
वे दिन
अब दूर नहीं
सरपट भाग रहा है
काल
झटपट जाग रहा है
पुरुषार्थ का फल
भाग्य का विशाल
भाल !

प्रभातीय लालिमा सा
ललित लोहित लाल
उदीयमान
शुभ्र भानु बाल
श्री भगवत्पाद मूल
निजी भावना का फल

तत्काल
साधना के सम्मुख
नाच नाचता
काल
चलता साधक के अनुकूल
धीमी धीमी चाल

और ज्ञात हुआ
अज्ञात विषय
कि रसना
पराश्रित रस चख नहीं सकती

षड्रस नवरस
ये रस नहीं
नयना-गम्य अदृश्य
रस गुण की विकृतियाँ
क्षणिका जड़ की कृतियाँ
आत्मा अरस रहा
रसातीत
सरस रसिया
निज रस लसिया
निज घर वसिया

निश्चय से
और रसीली रसना
नहीं मरती
अमरावती
अजरा अमरा
लीलावती

तभी वह
सर्वप्रथम
भक्ति भाव से भीगी
भक्ति रस गुणगान
अनुपान
करती करती कब
अनजान

यह रसना
समरस सिंचित
सौम्य सुगंधित
पराग रंजित
प्रभुपद-पंकज में
तात्कालिक
अपनी परिणति
आकुंचित कर
संकोचित कर
संक्रमित संक्रान्त
होती है

किन्तु कभी कभी
लोमानुलोम
या प्रतिलोम क्रम से
सरस !! सरस!!! सरस!
परम स्वातम रस
अरस आतम से
वार्ता करती बस !

जिससे संचारित है
संचालित
आत्मा के वे, नस नस !!
संयत सहज
शान्त सुधा रस
पीती जाती
पीती जाती

अपनी आँखें
निमीलित कर
कर वाचा गौण
मौन
भावातीत
स्फीत उदीत
समीत समवेदना में
डूबी जाती
अनंत अन्तिम छोर
की ओर
डूबी जाती डूबी जाती

विषयासक्त
कामुक भावों से उद्भूत
अभिभूत
आधियाँ
पूर्वकृत विकृत
कर्मोदय संपादित
महा व्याधियाँ
और
भौतिक/लौकिक/बौद्धिक
पर संबंधित
बाहरी भीतरी
उपाधियाँ
अनपेक्षित कर!
संकल्प विकल्पों
नाना जल्पों
नहीं छूती
रह अछूती
निर्विकल्प
समाधि निःसृत
रसास्वाद से
स्वादित

अयि ! रसना
अमित अनागत काल तक
मेरी बनी रहे
शरणा!

□□□

दीन नयन ना

निश्चल
निश्छल
संवेदनशील
समता छलकती
लोचनों में
धवलिमा मिश्रित
गुलाब फूल की
हलकी लालिमा सी भी
तरल रेखा
नहीं नहीं
कभी न खिचें
निन्दोपजीवी
मतिहीन/दीन
विषयों, कषायों में
सतत सल्लीन
मानव मुख से
अश्राव्य निन्द्य वचन
सुनकर
हे करुणाकर !
गुणगण आकर !

□□□